ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO. 120-122
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-6, Issues-7 YEAR- 2016 (Extra)

वर्तमान समय में गांधी जी का आर्थिक चिन्तन

रामाश्रय यादव

असि0 प्रोफेसर– समाज शास्त्र विभाग, गंगा गौरी पी0जी0 कालेज, रामनगर बैजावारी– आजमगढ़ (उ0प्र0), भारत

सारांश : महात्मा गांधी जी संसार के उन महानतम विचारकों में से एक है जिन्होंने भारत की सांस्कृतिक तथा सामाजिक परम्पराओं एवं पश्चिम के बुद्धिवाद से प्रेरणा प्राप्त करके सम्पूर्ण मानवता के लिए ऐसे सन्देश दिये जिनसे नैतिक सामाजिक और आर्थिक राजनीति समस्याओं को समाधान करने में उनकी गहरी सुझ–बुझ दिखाई देती है उन्होंने अपने विचारो से भारतीय समाज की जिस नयी संरचना का निर्माण करने भागीरथ प्रयत्न किया उसी कारण उन्हें भारत का राष्ट्रपिता कहा जाता है।

आज हम जीवन के एक प्रमुख उद्देश्य अर्थात् 'अर्थ' के संबंध में गांधी द्वारा व्यक्त किये गये विचारों का विष्लेशण करेंगे। वर्तमान समय में भारत 21 वीं सदीं में प्रवेश कर चुका है और उसके भी दस वर्ष पूरे हो चुके है। परन्तु पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित विकास के ढांचें ने 21 वीं सदी में भी पुरानी चुनौतियों तथा गिरी, अशिक्षा, भूखमरी, बेरोजगारी और असामान्य आर्थिक विकास के समाधान का कोई उचित प्रबन्ध नहीं किया। आज स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि देश में एक वर्ग तो विकास की गति में विकसित देशों के स्तर पर पहुंच गया और दूसरा वर्ग अभी भी विकास की आस में जीवन गुजार रहा है। अमीरों और गरीबों के मध्य का फासला बढ़ रहा है। अंधाधुंध पश्चिमी सभ्यता की नकल और सुविधा भोगी संस्कृति के अनुकरण के कारण आज भारत कई नई परेशानियों से ग्रस्त हो चुका है। पर्यावरण संकट नदियों का प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग, कार्बन डाई आक्साइड की अधिकता के कारण होने वाला वायु प्रदूषण, क्योंकि बिना सोचे विचारे किये विकास का ही परिणाम है औद्योगीकरण, नगरीकरण जनसंख्या वृद्वि के कारण पर्यावरण संकट आर्थिक विकास गति मे बॉधा पहुँचा रहा है। जहाँ प्रकृति के साथ सह संबध स्थापित करने की प्रकिया हेतु सतत प्रयास की आवश्यकता है। गांधी ने ग्राम स्वराज मे विचार व्यक्त किया था कि न सिर्फ भारत की बल्कि सारी दुनिया की अर्थ रचना ऐसी होनी चहिए। जिसमे किसी को भी अन्न और वस्तु के अभाव की तकलीफ न सहनी पडे और दूर एक व्यक्ति को इतना काम आवश्य मिल जाना चाहिए की वह अपने खाने पहनने की जरूरतों को पुरी कर सके और यह आर्दश निरुपवाद रूप से तभी कर्यान्वित किया जा सकता है जब जीवन की प्राथामिक आवश्यकताओं के उत्पादन के साधन जनता के नियन्त्रण में रहे। वे हर एक को बिना किसी बाधा के इसी तरह उपलब्ध हो जाय किसी भी हालत में वे दूसरों के शोषण के लिए चलाये जाने वाले व्यापार का वाहन न बने किसी भी देश रष्ट्र या समुदाय का उन पर एकाधिकार अन्यायपूर्ण होगा। आज हम न केवल अपने इस दुनिया दुखी देश में बल्कि दुनिया के दूसरे हिस्सो मे थी जो गरीबी और भूखमरी उसका कारण इस सरल सिद्वान्त की उपेक्षा ही है।1

गॉधी जी का निर्देश– गॉधी जी का आर्थिक विचार आदर्शवाद सत्याग्रह–दर्शन सत्य अहिंसा और नौतिकता के आदर्शो से जुडा हुआ है, क्योकि गाँधीजी का विष्वास या कि आन्तरिक शुद्विकरण तथा अनुशासन के द्वारा ही सत्य के लिए आग्रह किया जा सकता है। इसका उद्देश्य मनुष्य की चेतना में आमूल परिवर्तन करना तथा एक ऐसी व्यवस्था की स्थापना करना है जो मानवीय मूल्यों के हित में हो।

गाँधी जी के समाजवाद मे औद्योगीकरण की आवश्यकता नही है। उन्हें डर था कि औद्योगकिरण मानव जाति के लिए एक अभिशाप बन जायेगा इससे एक राष्ट्र के द्वारा दूसरे राष्ट्र का शोषण होता है उद्योगवाद का दारोमदार पुरी तरह इस बात पर होता है कि अपास में शोषण करने की क्षमता हो विदेशी बाजार आपके लिए खुले हो और आप के साथ कोई स्पद्वा करने वाला न हो।

गाँधी जी ने लिखा था कि मै नही मानता कि किसी देश के लिए किसी अवस्था मे बडें कल कारखानों का विकास करना जरुरी है। भारत के लिए तो वह और भी कम जरूरी है। मेरा विश्वास है कि स्वाधीन भारत दुख से कराहते हुए संसार के प्रति अपना कर्तव्य अपने सहस्रो गृह–उद्योगों का विकास करके सादा उदार जीवन अपनाकर और संसार के साथ शान्तिपूर्वक रहकर ही पुष कर
सकता है।2 साथ ही मैं मानता हूँ कि कुछ मुख्य उद्योग आवश्यक है। मै आराम से बैठकर बाते करने वाले के समाजवाद या सशस्त्र समाजवाद को नही मानता। मैं सबके हदय परिवर्तन की प्रतिक्षा किये बिना अपनी श्रद्वा के अनुसार, काम करने मे विश्वास रखता हूँ। इसलिए मुख्य उद्योगो को गिनाए बिना ही जिन उद्योगो में बहुत से आदमियों को एक साथ काम करना पडता है उन पर राज्य का अधिकार स्थापित कर दूँगा। उनका परिश्रम कुशलता का हो या मामुली उनकी पैदवार पर स्वामित्व राज्य की मार्फत उन्ही का होगा, परन्तु चूँकि ऐसे राज्य की कल्पना मैं अहिसा के आधार पर ही कर सकता हूँ। इसलिए

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-6, Issues-7 YEAR- 2016 (Extra)

धनवानों की सम्पति को जबरदस्ती नही छिनूँगा, परन्तु उस राज्य का अधिकार करने की प्रक्रिया में इनका सहयोग चाहूँगा। अमीर हो गरीब समाज में कोई अछुत नहीं है। दोनों एक ही रोग के फोड़े है और अन्त में तो सभी मनुष्य हैं।"

इसलिए गांधी जी ने स्पश्ट ही लिखा है, " मेरे समाजवाद का अर्थ सर्वोदय। मैं गूँगे–बहरे और अंधों को मिटाकर उठना नहीं चाहता। औरों के समाजवाद में इन लोगों के लिए कोई जगह नहीं है। भौतिक उन्नति ही उनका एकमात्र उद्देश्य है। उदाहरणार्थ, अमेरिका का ध्येय है कि उसके प्रत्येक शहर निवासी के पास एक मोटर हो। मेरा यह ध्येय नहीं, मैं अपने व्यक्तित्व के पूर्ण विकास के लिए आजादी चाहता हूँ अगर मैं चाहू तो आसमान में टिमटिमाते तारों तक पहुँचने की सीढ़ी बनाने की आजादी मुझे मिलनी चाहिए।"

वर्तमान युग में किसी भी विचार के उपयोगी भाग को ग्रहण करने की प्रणाली का पालन किया जाने लगा है चाहे वह पूँजीवाद हो समाजवाद हो या लोकतंत्र हो। तब आवश्यकता है कि गांधी जी के आर्थिक विचारों के उन बिन्दुओं पर ध्यान केन्द्रित करने की जिन्हें हम वर्तमान सन्दर्भ में क्रियान्वित कर सकते हैं।

भारत सरकार द्वारा अपनी विभिन्न ग्रामीण रोजगार योजनओं द्वारा गांवों में प्रत्येक परिवार को सम्मानपूर्वक जीवन यापन उपलब्ध कराने का प्रयास ऊपर वर्णित गांधी जी के विचारों को ही प्रदर्शित करता है। परन्तु इन योजनाओं के अतिरिक्त आवश्यकता इस बात की भी है कि ऐसी परिस्थितियों का गांवों में निर्माण किया जाय कि ग्रामीणों को स्वयं रोजगार उपलब्ध हो सकें। इसके लिए गांधी ने प्राथमिक शिक्षा की अनिवार्यता और इसके पश्चात् उद्योग धन्धों की शिक्षा को आधार बनाने पर जोर दिया था। यदि वर्तमान समय में देश के विकास से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं पर उचित ध्यान दिया जाय, तो शायद आज रोजगार के पुराने पारंपरिक उद्योगों के अतिरिक्त नये–नये स्वरोजगार के विभिन्न साधन उपलब्ध कराये जा सकते हैं। सूचना प्रौद्योगिकी, कम्प्यूटर, विज्ञान और तकनीकी के विभिन्न क्षेत्रों में होने वाली प्रगति बेशक गांवों तक पहुंच रही है। परन्तु यह वर्तमान समय में गांवों के लोगों तक केवल एक ऐसे साधन के रूप में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा उपलब्ध करायी जा रही है, जिससे मात्र उनकी उन्नति सम्बद्ध है। ज्ञान का प्रयोग जब तक सभी के विकास के लिए नहीं किया जायेगा। तब तक देश का सम्पूर्ण विकास सम्भव नहीं है, अर्थात् यह सदैव एकांगी रहेगा।

भारत के विकास में गांधी जी के विचार– गांधी जी ने जब भी भारत के विकास के विषय में विचार किया तब उनकी प्राथमिकता में गांव सबसे ऊपर थे। उन्होने गांवो में रोजगार के साधन उपलब्ध कराने का मात्र उपदेश ही नहीं दिया वरन् इसके लिए एक समुचित रूपरेखा भी प्रस्तुत की खेती व पशुपालनन के विषय में उन्होंने विचार व्यक्त किया कि यह तो प्रमुख रूप से जीविकोंपार्जन का साधन होगा ही साथ ही वर्ष के खाली समय में जब उनके पास खेती का कार्य नहीं होगा। तब मधुमक्खी पालन, चमड़ा, उद्योग और हथकरधों आदि के प्रयोग द्वारा वह केवल अपने परिवार हेतु धनोपार्जन ही नहीं कर सकेंगे बल्कि इसके द्वारा गांवों को आत्मनिर्भर बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेंगे। गांधी ने इस संबंध में कहा था कि "गांवों की जांच पड़ताल की जायेगी और ऐसी चीजों की एक सूची तैयार की जायेगी, जो किसी मदद के बिना या बहुत थोड़ी मदद से स्थानीय स्तर पर तैयार हो सकती है।" [3] स्पष्ट यह विचार इस समय इतना ही महत्वपूर्ण है। गांवों में रोजगार उपलब्ध कराने हेतु अनेक योजनाएं बनाई जा रही है, परन्तु इनमे सरकार द्वारा गाँवो की सहभागिता कृत्रिम रूप से उन्हे रोजगार उपलब्ध कराकर पूरा करने की अधिक है, जबकि गांधी की विचार धारा में स्वरोजगार को विकसित करने का विचार प्रबल या यही कारण है कि कृत्रिम योजनाएं अपने उद्देश्य को पूर्ण करने में असफल सिद्ध हो रही है।

गाँधीजी का शिक्षा के प्रार्थ विचार– गाँधी ने शिक्षा को केवल व्यक्तित्व विकास या ज्ञान की प्रप्ति का साधन बनाने का सदैव विरोध किया। उनका विचार था कि शिक्षा को रोजगारपरक होना चाहिए। यदि शिक्षा द्वारा व्यक्ति को रोजगार में सहायता नहीं मिलेगी, तो वह शिक्षा व्यवस्था अपने राष्ट्र निर्माण के उद्देश्य में असफल तो सिद्ध होगी। गांधी जी का विचार या प्राथमिक शिक्षा के पश्चात् विद्यार्थियों विद्यार्थियों को प्रायोगिक व व्यवहारिक शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था होनी चाहिए, जिसमें वह अपने लिए रोजगार हेतु कोई तकनीकी व विद्या सीख सकें। परन्तु उनके विचारों को अनदेखी करते हुए स्वतंत्र भारत में अंग्रेजी शिक्षा पद्धति को ही आधार बनाये रखा गया जिसमें व्यवहारिक ज्ञान के स्थान पर मात्र सैद्धान्तिक शिक्षा प्रदान की जाती रही है। आज इसी सैद्धान्तिक शिक्षा ने शिक्षित बेरोजगारों की एक विशाल संख्या प्रस्तुत कर दी है, जो विकसीत होते भारत की एक विकट समस्या बनी हुई है। यदि शिक्षा प्रणाली की कमी पर स्वतंत्रता प्राप्ति के समय ही विचार कर लिया गया होता और विभिन्न तकनीकी और लघु उद्योगों को शिक्षा का आधार बना लिया जाता तो शायद देश की गरीबी का भी समाधान सम्भव हो जाता।

अंग्रेजी शासनकाल में शिक्षा का उद्देश्य रजनी पामदत्त के इस कथन से पूर्णतया स्पष्ट हो जाता है। मैकाले का उद्देष्य ऐसे विनीत आज्ञाकारी लोगों का एक वर्ग तैयार करना था, जो अपनी जनता से पूरी तरह कटरक अंग्रेजों की इच्छा की पूर्ति कर सके।[4] यद्यपि अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था ने अंग्रेजो की आवश्यकताओं को पूर्ण करने हेतु उपयोगी कार्य किया परन्तु

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-6, Issues-7 YEAR- 2016 (Extra)

स्वतंत्र भारत की आवश्यकता एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था की थी जो भारत के नागरिकों को उनके जीविको पार्जन हेतु ही योग्य न बनाए, बल्कि उन्हें इस प्रकार से सक्षम बनाये कि वह स्वयं के साथ राष्ट्र के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकें।

निष्कर्ष– किसी भी भारतीय समाजशास्त्री के लिए गांधी जी का अध्ययन करना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि उनका अध्ययन किये बिना विशुद्ध भारतीय विचारधारा को समझा नहीं जा सकता और न ही भारतीय समाज से संबंधित समस्याओं के सम्बन्ध में एक निश्पक्ष जानकारी प्राप्त की जा सकती है। गांधी जी के विचारों से भारतीय परिस्थितियों का जितना स्पष्टीकरण होता है उतना और किसी से नहीं होता। वास्तविकता तो यह है कि भारतीय समाज और समकालीन परिस्थितियों को समझने के लिए गांधीवादी विचारधारा अत्यन्त आवश्यक है और इसलिए एक समाजशास्त्री के लिए गांधीजी का अध्ययन बहुत जरूरी हो जाता है। गांधी राष्ट्र के निर्माण के लिए सत्य, अहिंसा को प्रमुख शक्ति के रूप में देखते थे, यदि नागरिकों में ईमानदारी, न्याय और दया का अभाव होगा, तब निर्बल नागरिकों की न्याय और अधिकार प्राप्त करने की सम्भावना क्षीण हो जाएगी और इस प्रकार निर्मित राष्ट्र में शक्तिशाली वर्ग द्वारा अत्याचार पूर्ण आचरण की प्रवृत्ति बढ़ेगी गांधी जी सदैव नैतिक आदर्शो को जीवन का महत्वपूर्ण अंग मानते थे उनका मानना था कि किसी राष्ट्र के चरित्र का निर्माण उसके नागरिकों प्रतिबिम्ब से होता है वर्तमान सन्दर्भ में गांधी के कथन के परिपेक्ष्य में भारत की स्थिति पर विचार किया जाये तो यह स्पष्ट होता है कि राष्ट्र विकास की भौतिकवादी राह पर तो बहुत आगे बढ़ गया है, परन्तु नैतिकता और ईमानदारी के मानकों पर कहीं बहुत पिछड़ गया है विकास का मानक केवल उद्योगों और व्यापार का विकास करना बन गया है। जिसमे मानव भी कल कारखानो के मशीनी पुर्जो की तरह कार्य कर रहा है। जिसमे उसकी संवेदनाओं का ह्रास हुआ है। जिसके लिए गांधी अपनी पुस्तक ग्रामस्वराज में सदैव अपनी चिन्ता भाविष्य मे इन बुराइयों के बढ़ते को लेकर व्यक्त कर चुके थे। हम उद्यम चाहते है हमे उद्यमशील बनना चाहिए और अधिक आत्मनिर्भर बन जाये यदि हमे यत्रों की आवश्यकता होगी तो समय आने पर हम अपने देश मे यन्त्र दाखिल करेगे एक बार अहिंसा के अनुसार, अपना जीवन बना लेगे तो उसके बाद हम चन्त्र पर नियन्त्रण रखने की कला सीख लेगे[5] मनुष्य के जीवन का लक्ष्य धर्म अर्थ काम मोक्ष है। यह चारो ही उद्देश्य समग्र रूप मे एक सम्पूर्ण और संन्तुलित मानव का निर्माण कर सकते है। परन्तु वर्तमान समय मे धर्म और मोक्ष का लक्ष्य भी अर्थ द्वारा प्राप्त करने का प्रयास किया जा रहा है। यदि जीवन के सच्चे ज्ञान तक पहुँचना है, तो उसका मार्ग सत्य और त्याग द्वारा संम्भव होता है, जो अर्थ को जीवन का एक उद्देशय मानता है, परन्तु अन्तिम लक्ष्य नही है। यह गीता का उपदेश गाँधी के सम्पूर्ण जीवन दर्शन मे समाहित है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. महात्मा गांधी 'ग्राम स्वराज नवजीवन प्रकाशन मन्दिर अहमदाबाद 1998 पृ0 20.
2. हरिजन (1–9–1946).
3. गांधी जी, 'मेरे सपनों का भारत' नवजीवन प्रकाशन मन्दिर अहमदाबाद 1999 पृ0 118.
4. पामदत्त रजनी, आज का भारत मैकमिलन कम्पनी ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली, 1977 पृ0 315.
5. गांधी महात्मा, ग्राम स्वराज्य पृ0 22.

*****

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14